पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.04.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : **9810117464, 9868051444**

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-21 चैत्र-2082 दयानन्दाब्द 201 01 अप्रैल से 15 अप्रैल 2025 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.04.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

94वें बलिदान दिवस पर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

बलिदानी राष्ट्र की नीव के पत्थर होते हैं –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

नई दिल्ली, 23 मार्च 2025 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में शहीद भगत सिंह, राजगुरु,सुखदेव के 94वे बलिदान दिवस पर आर्य समाज आनंद विहार विहार,पूर्वी दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली–गाजियाबाद के कौने कौने से सैकड़ों आर्य समाजियों ने पहुॅच कर श्रद्धांजलि अर्पित की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि शहीद राष्ट्र की अमानत हैं उनके बलिदान पर ही राष्ट्र की नींव खड़ी होती है। नयी पीढ़ी को उनके बलिदान के बारे में बताने की आवश्यकता है जिससे वह राष्ट्र भक्ति की भावना से ओतप्रोत हों इसलिये पाठ्यक्रम में उनके बारे में जानकारी देनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत रहे हज़ारों नौजवान उनकी प्रेरणा से आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।अब इस आजादी की रक्षा का दायित्व युवा पीढ़ी का है। समारोह अध्यक्ष शिक्षाविद् अशोक जेठी ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता का इतिहास बताने की आवश्यकता है जिससे वह आजादी की कीमत पहचान सकें।आर्य समाज के प्रधान विनोद खुल्लर ने कहा कि आर्य समाज सदैव देश भक्तों के बलिदान को याद करता है। सुप्रसिद्ध गायक नरेंद्र आर्य सुमन व प्रवीण आर्य पिंकी, प्रवीण आर्य गाजियाबाद, रजनी गर्ग के देश भक्ति गीतों पर लोग झूम उठे। आचार्य यशपाल शास्त्री व गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि आर्य समाज युवा शक्ति को प्रेरित करने का प्रयास करता रहता है। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य देवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ के साथ किया। परिषद के राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई ने सभी का आभार व्यक्त किया। आर्य नेता दीपक वर्मा, दिनेश सेठ, वेद प्रकाश आर्य,राम कुमार आर्य, यशोवीर आर्य, सुरेश आर्य, प्रमोद चौधरी, प्रमोद सक्सेना, नरेश चन्द्र आर्य, त्रिलोक शास्त्री, ओम सपरा, यज्ञवीर चौहान ,यशपाल शर्मा, ईश् नारंग, सुरेंद्र गंभीर, संजय आर्य पत राम त्यागी आदि उपस्थित है।

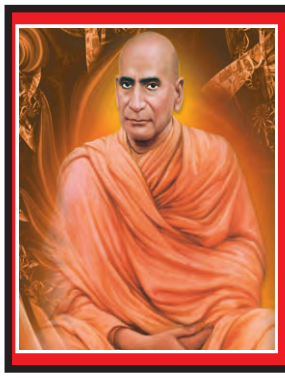

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया, जिनके खूँ से जले थे चिरागे वतन।
आज महकते है मकबरे उनके, जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की केन्द्र सरकार से माँग

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन

नया बाजार दिल्ली को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

ईश्वर की उपासना से मनुष्य को क्या लाभ प्राप्त होता है?

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य कोई भी काम करता है तो वह उसमें प्रायः अपनी हानि व लाभ को अवश्य देखता है। यदि किसी काम में उसे लाभ नहीं दिखता तो वह उसे करना उचित नहीं समझता। ईश्वर की उपासना भी इस कारण से ही नहीं की जाती कि लोगों को ईश्वर का सत्यस्वरूप व उपासना से होने वाले लाभों का ज्ञान नहीं है। यदि सब मनुष्यों को ईश्वर का सत्यस्वरूप एवं गुण, कर्म व स्वभावों का ज्ञान हो जाये तो निश्चय ही उनकी ईश्वर से मेल व मित्रता करने में प्रीति होगी जिसका परिणाम मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति के रूप में सामने आता है। ऋषि दयानन्द वेदों के विद्वान और परमात्मा को प्राप्त सिद्ध योगी व ऋषि थे। उन्होंने अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर नियम दिया है कि संसार का उपकार करना उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् सबकी शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना। जिस मनुष्य का शरीर पूर्ण स्वस्थ, निरोग व बलवान है, जो आत्म ज्ञान से युक्त है व तदवत् आचरण करता है तथा जो सामाजिक जीवन व्यतीत करते हुए समाज सुधार व उन्नति के कार्य करता है, वह मनुष्य सर्वांगीण उन्नति को प्राप्त मनुष्य कहा जा सकता है। ऐसा मनुष्य ही ईश्वर की उपासना करने सहित ईश्वर द्वारा सृष्टि के आदि में प्रदत्त चार वेदों का अध्ययन करने से बनता है। वेद प्रचार पर विचार करते हैं तो वह मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति में अमोघ साधन प्रतीत होता है। जिस मनुष्य ने वेदों का सत्य तात्पर्य जान लिया और उसके अनुसार आचरण व व्यवहार करता है, वह मनुष्य ज्ञान व बल से युक्त होकर अपना व समाज का कल्याण करता है। यह लाभ उपासना व वेदों के स्वाध्याय सहित ज्ञान के अनुरूप आचरण करने से प्राप्त होते हैं।

ईश्वर की उपासना से मनुष्य की आत्मा का ज्ञान बढ़ता है। इसका कारण यह है कि ईश्वर ज्ञानवान वा सर्वज्ञ सत्ता है। वह सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी भी है। हमारी सूक्ष्म आत्मा से भी अत्यन्त सूक्ष्म व आत्मा के भीतर भी अखण्ड व एकरस होकर परमात्मा विद्यमान है। वह आत्मा की भावनाओं को जानता है। हम जो विचार करते हैं वह भी हमारी आत्मा में विद्यमान परमात्मा अपने अन्तर्यामी स्वरूप से जानता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान भी है। उसी ने उपादान कारण त्रिगुणात्मक प्रकृति से इस वृहद ब्रह्माण्ड को बनाया है व वही इसका संचालन व पालन कर रहा है। वह हमारे मन व आत्मा के विचारों को भी जानता है तथा उन्हें प्रेरणा करने की सामर्थ्य रखता है। इसी कारण से गायत्री महामन्त्र में ईश्वर से मनुष्य की बुद्धि को शुद्ध करने व उसे सन्मार्गगामी बनाने की प्रार्थना की जाती है। उपासना में मनुष्य ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना भी साथ–साथ करता है। स्तुति करने से परमात्मा के गुण, कर्म व स्वभाव का ज्ञान व परमात्मा में प्रीति होने से उससे मित्रता व मेल हो जाता है। प्रार्थना करने से मनुष्य निरभिमानी बनता है। ईश्वर की प्रार्थना से मनुष्य में अहंकार व अभिमान दूर हो जाता है। जिस प्रकार एक मित्र दूसरे मित्र का हित व रक्षा करता है, उपासना व ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना से परमात्मा से मित्रता हो जाने पर हमें ईश्वर से रक्षा व अपनी हित सिद्धि के सभी लाभ प्राप्त होते हैं।

परमात्मा सर्वज्ञ एवं सब गुणों का अजस्र स्रोत है। मनुष्य की आत्मा एकदेशी व ससीम होती है। यह अल्पज्ञ होती है। उसे अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए एक सर्वज्ञ सत्ता की आवश्यकता होती है। वह सत्ता संसार में एकमात्र ईश्वर ही है। अतः ईश्वर की उपासना से ईश्वर की संगति होती है। इस संगति से मनुष्य की आत्मा के दोष दूर होते हैं और उनका स्थान ईश्वर के सद्गुण लेते हैं। उपासना करने से आत्मा के दुर्गुण व दुर्व्यसन दूर होते जाते हैं और ईश्वर के श्रेष्ठ व उत्तम गुण आत्मा में प्रविष्ट होते जाते हैं। इससे मनुष्य श्रेष्ठ व उत्तम गुणों से युक्त ज्ञानवान व बलवान बनता है। यह लाभ कोई छोटा लाभ नहीं है। अतः सभी मनुष्यों को ईश्वर के सत्यस्वरूप व सत्य गुणों आदि को जानकर उसकी नित्य प्रति, दिन में दो बार, प्रातः व सायं समय में उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे हमारे सभी दुर्गुण व बुराईयां दूर हो जायेंगी और हम एक गुणवान, पुरुषार्थी तथा ईश्वर के सच्चे उपासक व सद्ज्ञान से युक्त मनुष्य बन सकेंगे।

मनुष्य जब ईश्वर की उपासना करता है तो उपासना के एक अंग स्वाध्याय पर भी ध्यान देता है। इससे मनुष्य को ईश्वर व आत्मा सहित संसार के सब सत्य रहस्यों का ज्ञान हो जाता है। इस ज्ञान का प्रभाव मनुष्य के आचरण पर पड़ता है। वह ईश्वर की उपासना सहित मनुष्य, समाज व देश के लिये हितकारी यज्ञीय कर्मों को करता है। इससे मनुष्य पुरुषार्थी बनकर देश व समाज का उपकार करता है। वेद मनुष्य को सदाचार की शिक्षा देते हैं। हमारे सभी ऋषियों व योगियों सहित वैदिक विद्वानों के जीवन सदाचार से युक्त आदर्श जीवन हुआ करते थे। सदाचार से युक्त जीवन के अनेक लाभ होते हैं। जितना सुख व शान्ति एक सदाचारी मनुष्य के जीवन में होती है, उतने सुख व सन्तोष से युक्त जीवन का अनुमान ईश्वर उपासना व ईश्वर के सत्य ज्ञान से रहित मनुष्य के जीवन में नहीं होता है। ईश्वर ज्ञान व उपासना से रहित जो मनुष्य भौतिक इन्द्रियों के सुख का जीवन व्यतीत करता है, वह जीवन परिणाम में दुःखदायी ही होता है। इन्द्रिय भोग से मनुष्य का शरीर निर्बल हो जाता है जिससे रोग होकर मनुष्य को दुःख होते हैं। अतः एक उपासक का जीवन ही ऐसा जीवन होता है जिसमें रोग नहीं होते अथवा अत्यन्त न्यून मात्रा में होते हैं। उपासक के जीवन में सुख व सन्तोष की असीम मात्रा होती है या उसे उत्पन्न किया जा सकता है जो अन्यथा नहीं होती।

ईश्वर की उपासना व वेदों के स्वाध्याय से मनुष्य को सत्कर्मों को करने की प्रेरणा मिलती है। सत्कर्मों में परोपकार व दान आदि भी सम्मिलित होते हैं। जीवनयापन के लिये मनुष्य व्यवसाय तो करता ही है परन्तु उपासना से युक्त मनुष्य का व्यवसाय सदाचार व सदाचारण से युक्त ही होता है। वेदों में कहा गया है कि अविद्या व सद्कर्मों से ही मनुष्य मृत्यु से पार जाता है। वेदों में यह भी कहा गया है कि ईश्वर को जानकर मनुष्य मृत्यु से पार जाता है। यह दोनों बातें परस्पर समान है। इसका अर्थ है कि सद्ज्ञान व ज्ञानयुक्त आचरण व व्यवहार दोनों को साथ साथ करने से ही मनुष्य मृत्यु से पार जाता है और मोक्ष को प्राप्त होता है। अतः उपासना और सद्कर्मों से मनुष्य को मृत्यु पर विजय प्राप्त होती है तथा अमृतमय मोक्ष की प्राप्ती भी होती है। उपासना से होने वाले इस लाभ का भी महत्व संसार में सबसे बढ़कर है। अतः सभी को उपासना करते हुए ईश्वर से प्राप्त प्रेरणा के अनुसार सत्कर्मों व परोपकार एवं दान आदि यज्ञीय कार्यों को करते रहना चाहिये।

उपासना व स्वाध्याय से ईश्वर, जीवात्मा तथा सृष्टि के ज्ञान सहित मनुष्य के कर्तव्यों का बोध होता है। इससे मनुष्य असत्य मार्ग का त्याग कर दुःखों से बचता है तथा सन्मार्ग पर चलकर मनुष्य जीवन के लक्ष्य मुक्ति के लक्ष्य की ओर बढ़ता व प्राप्त होता है। उपासना से मनुष्य को आनन्द की प्राप्ति होती है जो अन्य किसी उपाय व साधन से नहीं होती। ईश्वर आनन्दस्वरूप है। उपासना में मनुष्य की आत्मा परमात्मा से संयुक्त हो जाती है। इससे परमात्मा का आनन्द जीवात्मा को अनुभव होता है। यदि उपासना नहीं करेंगे तो परमात्मा के आनन्द को न तो जान पायेंगे और न अनुभव ही कर पायेंगे। परमात्मा से हमें पुरुषार्थी बनने की प्रेरणा भी मिलती है। परमात्मा कभी विश्राम नहीं करते। वह संसार के कल्याण के लिये प्रत्येक पल व क्षण कार्य करते हैं। उन्होंने सारे ब्रह्माण्ड को धारण कर रखा है। संसार में सभी नियमों का पालन होता हुआ देखने को मिलता है। सूर्य समय पर उदय व अस्त होता है। समय पर सभी ऋतुएं आती व जाती हैं। मनुष्य जन्म व मरण तथा जीवन के सुख दुःख भी ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार मनुष्यों को प्राप्त हो रहे हैं। अतः ईश्वर के सतत क्रियाशील, गतिशील व पुरुषार्थ से युक्त जीवन को देखकर

(शेष पृष्ठ 3 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 706वां वेबिनार सम्पन्न

'दिलों का मिलन होली' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी सम्पन्न

ओम नाम के रंग में रंग जाये –आचार्य विमलेश बंसल

मंगलवार 18 मार्च 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'दिलों का मिलन होली' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 705 वा वेबिनार था। वैदिक विदुषी आचार्य विमलेश बंसल ने कहा कि व्यक्ति जब तक उस परमचेतन सत्ता के साथ ज्ञान, ध्यान के रंग में रंग षड संपत्ति की पिचकारी भरकर प्रतिक्षण होली नहीं खेलेगा, तब तक कितनी भी प्रतिवर्ष होली खेले मानव तन की होली कतई सार्थक नहीं हो सकती। रंगों में पड़ते नव विघ्नों की भांग हो, या अधर्म अनाचार के काले ठप्पे जब तक विनष्ट नहीं होंगे तब तक मिलन संभव नहीं। ईश्वर के होने के लिए अपने और समाज के व्यवहार के साथ ईश्वर के संग भी वैदिक व्यवहार की होली खेलनी ही होगी। नित्य एक घंटे सुबह शाम तो ॐ रंग में रंगना होगा ही, प्रतिक्षण भी प्रत्येक कर्म में भी उसे सबके साथ न्यायसंगत व्यवहार करते हुए अनेकता में एकता का रंग भर वरना होगा इत्यादि। अंत में स्वरचित ब्रज भाषा में होली का गीत भी सुनाया।

'महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

स्वराज और सुराज का मंत्र महर्षि दयानन्द ने दिया –डा. राम चन्द्र

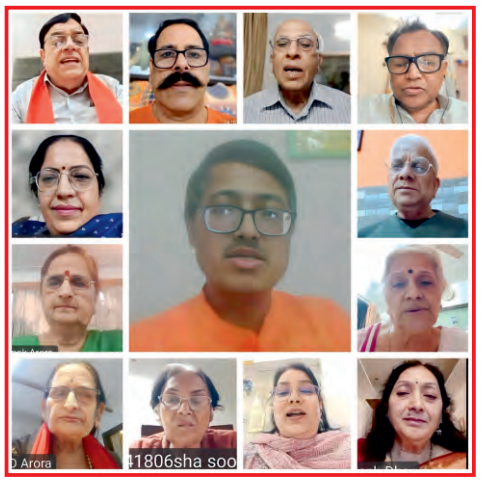

मंगलवार 25 मार्च 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 706वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ. रामचन्द्र (संस्कृत विभागाध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि नवजागरण के पुरोधा, आर्यसमाज के संस्थापक एवं आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा व्यवस्था,राजधर्म, इतिहास, स्त्री शिक्षा,आर्ष गुरुकुल परम्परा, कृषि एवं गोरक्षा, वेदों की यथार्थ व्याख्या एवं सच्ची उपासना पद्धति आदि विविध क्षेत्रों में अतुलनीय योगदान दिया है। उनके द्वारा रचित ग्रंथों, पत्र व्यवहार, शास्त्रार्थ, व्याख्यान एवं तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित उनके विचारों के माध्यम से हमें उनके सपनों के भारत की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। वर्तमान भारत में गुरुकुल परम्परा, समान रूप से वेदाध्ययन एवं शिक्षा का अधिकार तथा गोरक्षा आदि असंख्य पक्षों के वे जन्मदाता हैं। भारत की स्वतंत्रता में स्वदेशी, स्वराज एवं सुराज का मंत्र भी प्रबल रूप से महर्षि दयानन्द ने ही दिया था।डॉ. रामचन्द्र ने कहा कि महर्षि दयानन्द के स्वस्थ,समृद्ध एवं सशक्त भारत निर्माण के अनेक सपने अभी अपूर्ण ही हैं।शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में महर्षि का स्पष्ट सन्देश था कि सबको तुल्य खानपान एवं वस्त्र दिए जाए चाहे वह राजकुमार हो या दरिद्र की संतान हो।यह सपना जब तक पूरा नहीं होगा तब तक उन्नत भारत की कल्पना सम्भव नहीं है। आज समाज में नैतिक मूल्यों का घोर क्षरण हो रहा है जिससे सामाजिक समरसता बिखर रही है। महर्षि दयानन्द ने संस्कारों एवं पञ्च महायज्ञों के माध्यम से इसे सुधारने का विधान किया था।आज युवा पीढ़ी में अपने ही देश की संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास के प्रति गौरव बोध कम हो रहा है।यह चिंताजनक है कि आज बडी संख्या में युवा भारत को भारत न कहकर इंडिया कहने में गौरव अनुभव करता है। महर्षि ने अपने ग्रन्थों में भारतीय गौरव को प्रकाशित करने का अभूतपूर्व कार्य किया था।वे भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के यथार्थ लेखन के भी प्रबल पक्षपाती थे। आज न केवल पाठ्यक्रम में अपितु लोकतंत्र के मंदिर संसद में भी राष्ट्र के गौरव पुरुषों के प्रति अपमान जनक टिप्पणी हो रही हैं।महर्षि के सपनों के भारत में इस प्रकार के कदाचार के लिए कोई स्थान नहीं है। मुख्य वक्ता ने कहा कि अमृत काल में भारत उन्नत,समृद्ध एवं सशक्त बने इसके लिए विद्यालय,महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं अन्य संस्थानों में महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों एवं विचारों का व्यापक अध्ययन होना चाहिए। बडी संख्या में दयानन्द पीठ एवं अध्ययन केन्द्र स्थापित होने चाहिए। एक टास्क फोर्स बनाकर महर्षि के सपनों के भारत के निर्माण का प्रयत्न करना होगा। मुख्य अतिथि आर्य नेता राजेश मेहंदीरत्ता व अध्यक्ष सुधीर बंसल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए आर्य समाज के 150 वे स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि हमें नववर्ष विक्रमी सम्वत् पर गर्व होना चाहिए और उत्साहपूर्वक मनाना चाहिए। गायिका प्रवीना ठक्कर, रजनी गर्ग, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता, प्रतिभा खुराना, सरला बजाज, सुधीर बंसल आदि ने मधुर भजन सुनाए।

(पृष्ठ 2 का शेष)

उपासक को भी सत्कर्मों व परोपकार की प्रेरणा मिलती है।

ईश्वर की उपासना से मनुष्य पाप कर्मों को करने से बचता है। उपासक पाप नहीं करता। यदि करता है तो ईश्वर उसे पाप करने से बचाता है। यदि कोई मनुष्य उपासना करने के साथ पाप कर्मों का व्यवहार भी करता है तो उसकी उपासना में खोट व कमी होती है। संसार में ऐसे भी मत व सम्प्रदाय हैं जो पुण्य व पाप कर्मों में अन्तर ही नहीं कर पाते। वह मांसाहार रूपी पाप कर्म का विरोध नहीं करते। वह दूसरे निर्दोष प्राणियों व मनुष्यों को भी अकारण कष्ट व दुःख देते हैं। ऐसे लोग धार्मिक व उपासक कदापि नहीं हो सकते। वैदिक आधार पर उपासना करने से मनुष्य पापों को करने से दूर हो जाता है। पाप से मुक्त तथा धर्म कर्मों को करने से मनुष्य की प्रवृत्ति सुख प्राप्ति व मोक्ष प्राप्ति में हो जाती है। मनुष्य मोक्ष मार्ग पर भी आगे बढ़ता है। उपासना व धर्म करने से मनुष्य का परजन्म व पुनर्जन्म तो निश्चय ही सुधरता है। जो मनुष्य शुद्ध मन व हृदय से परमात्मा की उपासना करेगा वह निश्चय ही पुरुषार्थी होगा, सद्कर्मों को करेगा, पुण्य कर्मों का संचय करेगा जिससे उसका आगामी व भावी जन्म श्रेष्ठ व उत्तम मनुष्य योनि सहित धन धान्य व सुखों से युक्त वातारण में होगा। इन सब कामों को करते हुए उपासक व साधक को आवश्यकतानुसार धन भी प्राप्त होता है जिसका त्यागपूर्वक भोग करते हुए उपासक उसको दूसरों को दान देकर उनकी सहायता व उन्नति में सहयोगी भी बनता है। ईश्वर की उपासना करने से मनुष्य को लाभ ही लाभ हैं। मनुष्य की सभी सद्इच्छायें व शुभ कामनायें ईश्वर की उपासना से पूर्ण होती है। मनुष्य को उपासना व साधना करने के साथ वेद, उपनिषद्, दर्शन ग्रन्थों एवं सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ सहित ऋषि दयानन्द के जीवन चरित का अध्ययन भी करना चाहिये। इससे उपासना में सफलता सहित मनुष्य को ज्ञानवृद्धि एवं उसकी शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति के अनेक लाभ प्राप्त होंगे।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

राष्ट्रीय आर्य कवि सम्मेलन हर्षोल्लास से सम्पन्न

होली जीवन में ऊर्जा का संचार करती है –प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी

आपसी भाई चारे प्रेम का प्रतीक है होली पर्व –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 14 मार्च 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद व आर्य समाज के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय कवि प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी ने ओजस्वी वाणी से गीतों द्वारा वातावरण को वीर रस का बना दिया। उनके गीत की पंक्तियाँ षजिस दिन दिल्ली ठीक हो गई देश ठीक हो जाएगाष ने धूम मचा दी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि होली केवल रंगों का त्यौहार नहीं अपितु प्रेम,सद्भाव और भाई चारे का प्रतीक है।इस दिन पुराने गिले शिकवे भूल कर नए सिरे से खुशियाँ में सरोबार होने का दिन है।अलग अलग रंग जीवन को ऊर्जा वान बना देते हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य रविदेव गुप्ता ने अपनी रचना होली है तो अपरिचित से परिचय कर लो,होली है तो सुपरिचित से मैत्री कर लो, होली है तो बिसरा कर सारे बैर भाव, दुश्मन को भी बाहों में भर लो, सुन कर कहा कि हमें जाति पाती से ऊपर उठकर देश के लिए सोचना चाहिए।बहादुरगढ़ से आए कवि दिनेश विद्यार्थी ने हास्य व्यंग्य की कविताओं से आनन्दित कर दिया।कवि गुरचरण मेहता,प्रवीण आर्य पिंकी,प्रवीण आर्य गाजियाबाद, विजय चौधरी, राजेश मेहन्दीरता ने अपने गीतों से जोश पैदा कर दिया। राष्ट्रीय मंत्री आचार्य महेंद्र भाई ने कहा कि होली उत्सव यज्ञ का प्रतीक है।स्वयं से पहले जड़ और चेतन देवों को आहुति देने का पर्व हैं।इसके वास्तविक स्वरुप को समझ कर इस सांस्कृतिक त्यौहार को मनाना चाहिए।होलिका दहन रूपी यज्ञ में यज्ञ परम्परा का पालन करते हुए शुद्ध सामग्री,तिल,मुंग,जड़ी बूटी आदि का प्रयोग कर वातावरण को सुगन्धित करना चाहिए। पार्षद राजपाल सिंह ने भी अपनी शुभकामनायें प्रदान की।प्रधान ओमप्रकाश वर्मा,मंत्री सुशील आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। प्रमुख रूप से आर्य नेता जितेंद्र डावर, महेन्द्र जेटली, नरेंद्र नारंग, सुरेंद्र गुप्ता, प्रकाशवीर शास्त्री, रविन्द्र आर्य, अतुल सहगल, रामकुमार आर्य, स्वदेश शर्मा, देवेन्द्र सैनी, नरेश आर्य आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

मुख्यमन्त्री बनने पर रेखा गुप्ता को बधाई

दिल्ली की नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता का हार्दिक स्वागत व द्वितीय चित्र में परवीन आर्य पिंकी बधाई देते हुए।

दुर्गेश आर्य प्रधान निर्वाचित

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दुर्गेश आर्य आर्य समाज संदेश विहार दिल्ली के प्रधान निर्वाचित हुए उनके साथ विजेन्द्र आनंद, एस के आहूजा उपप्रधान, डॉ. विशाल आर्य मंत्री, विजय आहूजा उपमंत्री व नीरज गर्ग कोषाध्यक्ष चुने गए। **युवा उद्घोष की और से हार्दिक बधाई–अनिल आर्य**

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान
आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

आर्य समाज आनंद विहार दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रणबीर लाल बत्रा का अभिनंदन करते अनिल आर्य,अरुण बत्रा, सुनीता बत्रा, परवीन आर्य पिंकी व कृष्णा पहुजा जी

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970